केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद की गतिविधियाँ

आदिवासी क्षेत्रों में अनुसंधान*

8. फाईलेरिया

निम्नलिखित औषधियों का फाईलेरिया रोग में चिकित्सीय मुल्यांकन :-

एपिस मेलिफिका, बैलाडोना, ब्रालाडोना, ब्रायोनिया एल्बा, लाईकोपोडियम, मर्कयुरियस सोल्व्युलिस, माईक्रोफाईलेरिया, नेट्रम म्युरियाटिकम, रोहडोडण्डरान, रहस टाक्सीकोडेण्डरान, कोडिड औषधि।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.), रांची क्षेत्र में लिया गया है।

1993-94 वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	-	176
लाभान्वित		26

निर्दिष्ट औषधियों के प्रभावकारी एवं पोटैन्सी

क्रमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
1.	एपिस मेलिफिका 30, 200	50	03
2.	ब्रायोनिया एल्बा 30	39	10
3.	रोहडोण्डरान 30	18	02
4.	बैलाडोना 30	16	02
5.	नैट्रम मम्युरियाटिकम 30	16	02
6.	कोडिड औषधि 30	14	02
7.	रहस टाक्सीकोडण्डरान 30	12	02
8.	आर्सनिक एल्बम 30, 200	11	03

अत्याधिक लाभकारी औषधियों के लक्षण

(1) एपिस मेलिफिका

जलोधर सूजन उग्रता रात्रि में, बाजु में तथा हाथ में सूजन उग्रता श्रम से तथा हाथों से कार्य करने पर, पूणिमा से पूर्व।

---

* पिछले अंक Vol. 17 (1 & 2) 1995 के पृष्ठ 36 से आगे।

सुधार विश्राम से तथा सांयकाल। डंक जैसा दर्द। तीव्र दर्दों के आघात, ठंड एवं ज्वर के साथ अंगों में लालीपन। भोजन एवं पेय पदार्थों का वमन, प्यास न लगना। जलन के साथ दर्द उग्रता छूने से, श्रम से तथा ठंडी सिकाई से सुधार।

(2) ब्रायोनिया एल्बा

जलोदन सूजन एवं दर्द उग्रता हिलने डुलने पर सुधार प्रातःकाल एवं सुधार से, दर्द में उष्णता से सुधार।

(3) रोहडोण्डरान

वृषण में सूजन उग्रता दिन में, चलने पर, सुधार नहाने से, चुभने जैसा दर्द उग्रता खड़े होने पर, बैठने से, सुधार लेटने पर, लक्षणों का ज्वर के साथ होना।

(4) बैलाडोना

तीव्र शोथ विकार एवं सूजन, दर्द, प्रभावित अंगों में उष्णता, लालीपन तथा खुजली एवं लसीका पर्व शोथ वृषण, लिंग में सूजन तथा त्वचा में मोटापन, दर्द में धड़कन जैसा उग्रता हिलने डुलने पर तथा त्वचा सुधार विश्राम से। विकारों का ज्वर, लसीकापर्वशोथ, सिरदर्द, बदनदर्द, प्रभावित अंगों में लालीपन, खुजली जलीय स्राव खुजाने के उपरांत। सूजन समाप्त होने के बाद त्वचा से छिलके उतरना। उष्णता से विकारों में सुधार। सर्द प्रकृति का रोगी।

9. आमाश्यी आंत्रशोथ

निम्नलिखित औषधियों का आमाश्यी आंत्रशोथ में चिकित्सीय मुल्यांकनः-

साएनोडोन डैक्टाईलोन, गैम्बोजिया, जलापा, जैट्रोफा, पोडोफाईलम।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.) इद्दूकी में लिया गया है।

1993–94 वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	–	60
लाभान्वित रोगियों की संख्या	–	24

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

कमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
1.	गैम्बोजिया मदर टिंक्चर	34	12
2.	जैट्रोफा 30, 200	12	04

3.	पोडोफाईलम 30	10	05
4.	जलापा मदर टिंक्चर, 30	02	01
5.	साएनोडोन डैक्टाईलोन मदर टिंक्चर	02	02

अत्याधिक प्रभावशाली औषधियों के लक्षण

(1) गैम्बोजिया

आंतों में गड़गड़ाहट होना, दस्त एवं बेहोशी छाना, अचानक दस्त का प्रकोप होना, दस्त का पिचकारी की तरह निकलना एवं आराम महसूस होना। मल पतला, पीला, ज्यादातर जलीय उग्रता सांयकाल। मलद्वार में जलन एवं बाहर निकलना। नाभि के आस पास मरोड़ होना एवं मल त्याग से सुधार।

(2) पोडोफाईलम

कुछ भी खाने से आमाश्य में खट्टा हो जाता है, आंतों में गड़गड़ाहट। मल, प्रचूर, जलीय बार–बार शोर के एवं वायु निष्कासन, दुर्गन्धयुक्त। दस्त प्रात:काल, प्रचुर मात्रा में, ऐसे कि जैसे हैण्डपम्प से पानी आता है।

10. कृमिरूगणता

निम्नलिखित औषधियों का कृमिरूग्णता में चिकित्सीय मुल्यांकन :-

चिलोन, एम्बैलिया राईब्स, फिलिक्समास, ग्रेनेटम, काऊसो, सैन्टीनीनम, सिर्हीईनम, साईनेपिस एल्बा, वर्नोनिया एन्थेलमिन्टका, थायमोल

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.) सेलम, भारमौर, डिफू, ईटानगर, जैपोर, चूराचांदपुर एवं गैंगटोक में लिया गया है।

1993–94 वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	–	733
लाभान्वित रोगियों की संख्या		639

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

कमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
.....	.....	.....	.....
1.	सैन्टीनिनम 3एक्स, 6एक्स,3,6,30,200	214	197

2.	चिलोन मदर टिंक्चर 3एक्स, 6एक्स, 3,6,30	185	172
3.	एम्बैलिया राईब्स मदर टिंक्चर, 3 एक्स, 30	112	96
4.	फिलिक्स मास मदर टिंक्चर, 3 एक्स, 200	81	68
5.	साईनेपिस एल्बा मदर टिंक्चर, 30, 3एक्स, 30	53	44
6.	ग्रेनेटम मदर टिंक्चर, 3 एक्स, 30	13	02
7.	वर्नोनिया एन्थेलमिन्टिक मदर टिंक्चर, 3 एक्स	13	02
8.	थायमोल 3,6,30,200	13	13
9.	सिरहीरनम 30	11	11

इनके अलावा सिना 30 भी प्रभावकारी पाई गई।

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(1) सैन्टीनीनम

गोल कृमिरूग्णता में अत्याधिक प्रभावकारी आंखों के आस पास काले धब्बे बनना। नासिका तथा गुदा में खुजली, दांत किटकिटाना, रात्रि में। बच्चों में रात्रि में खांसी होना। मितली, खाना खाने से सुधार। भूख कम लगना। नाभि क्षेत्र में दर्द। बेचैनी, चिड़चिड़ाना, सभी वस्तुओं की इच्छा परन्तु संतोष नहीं होता। निद्रा में खलल मूत्र पीला, तथा बिस्तर में असंयत मूत्र निकलना। रात्रि में दृष्टि का कम होना, मीठा एवं वसायुक्त खाने की इच्छा, बच्चों में। वमन के साथ खट्टे डकार आना।

(2) चिलोन

भूख कम लगना, अपचन, उदर वायु बनना, जिगर के बाएं भाग में दाहता गोल तथा पिन कृमिरूग्णता में प्रभावकारी। पेट के दाहिने हिस्से में दर्द, पसलियों के नीचे, दर्द का विस्तार नीचे की तरफ। जिगर में वृद्धि तथा चेहरा एवं आंखों में पीला पड़ना। पेट का फूलना। नींद में बेचैनी, सिर में पसीना आना एवं अंडे खाने की इच्छा।

(3) एम्बैलिया

पेट का फूलना। दस्त। भोजनोपरान्त तुरन्त फिर से भूख लग जाना। गुदा द्वार में खुजली। कृमिरूग्णता के साथ मल में अपचित पदार्थ। दांतों का किटकिटाना। स्वप्न, भययुक्त। चिड़चिड़ा स्वभाव। कृमिरूग्णता के साथ उदरवायु तथा अजीर्णता। भूख अच्छी लगना। नाभि क्षेत्र में दर्द। व्यापक कमजोरी। शारीरिक दुर्बलता तथा पेट का फूलना। नासिका में उंगली डालते रहना। चेहरे पर सफेद दाग तथा मीठा खाने की इच्छा।

(4) फिलिक्स मास

फीता कृमि के लिये औषधि। कब्ज पेट का फूलना। मरोड़ जैसे दर्द के साथ मीठा खाने की इच्छा। नासिका में खुजली। पीला चेहरा एवं आंखों के आसपास नीले धब्बे। मितली, सिर पर ज्यादातर, पसीना आना, नाभि क्षेत्र में दर्द। रात्रि में मुख से लार आना।

11. मलेरिया

निम्नलिखित औषधियों का मलेरिया रोग में चिकित्सीय मुल्यांकन:-

एल्सटोनिया कंस्ट्रीक्टा, एमूरा रोहितिका, अरेनिया डायडिमा, चिनीनम सल्फयुरिकम, चिरैता, लुफफा बिंदाल, मलेरिया आफिसिनेलिस, ओस्ट्रिया विर्जिनिका, ट्रिकोसैन्थिस डायोका, वाईटेक्स निगुन्डो।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.) एजावल, डिफू तथा गौंडा में लिया गया है।

1993–94 वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों	-	196
लाभान्वित रोगियों की संख्या		171

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

कमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
.....	.....	.....	.....
1.	चिनीनम सल्फयुरिकम 1 एक्स, 30	85	64
2.	चिरैटा मदर टिंक्चर, 6,30,200	33	32
3.	एमूरा रोहितिका 30	10	10
4.	मलेरिया आफिसिनेलिस 30,200	7	7
5.	अरेनिया डायडिमा 30,200	3	2

इनके अलावा आर्सेनिक एल्बम, रहस टाक्स, चिनीनम आर्सेनिकम, नैट्रम म्यूर एवं पल्सैटिला भी प्रभावकारी पाई गई।

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(1) चिनीनम सल्फयुरिकम

तीव्र ज्वर के साथ अत्याधिक ठंड तथा कंपकंपी महसूस करना। पसीना प्रचूर मात्रा में आने के बाद, ज्वर कम होना। तीव्र सिर दर्द एवं बदन दर्द, माथे में दर्द। खांसी एवं जुकाम तथा आंखों में लालीपन। जिव्हा पर सफेद परत, मध्यमें शुष्क, श्वास दुर्गन्धयुक्त तथा कड़वा स्वाद।

(2) चिरैता

तीव्र ज्वर ठंड एवं कंपकंपी। पानी की अधिक मात्रा के लिये प्यास लगना। पसीना आने के बाद ज्वर समाप्त हो जाता

है। तीव्र सिर दर्द तथा बदन में दर्द तथा मितली एवं वमन, मुख में कड़वा स्वाद। जिगर एवं पित्ती का बढ़ना। कब्ज एवं दस्त आना। ज्वर के बाद अत्याधिक कमजोरी।

(3) एमूरा रोहितिका

तीव्र ज्वर तथा माथे में दर्द। ज्वर के साथ ठंड तथा कंपकंपी मितली एवं वमन। पेट का फूलना तथा उदरवायु। पतला मल आना। ठंडे पानी की प्यास। जिगर एवं पित्ती का बढ़ना। पेट के दाहिने एवं उपरी हिस्से में संवेदनशील तथा कमजोरी।

12. अस्थिसन्धिशोथ

अस्थिसन्धिशोथ में निम्नलिखित औषधियों का चिकित्सीय मुल्यांकन:-

एक्टिया स्पाईकेटा, एग्नायुस्तुरा वेरा, कोलोफाईलम, फार्मिका रूफा, फार्मिक एसिड, लिथियम कार्बोनिकम, मैग्नोलिया ग्रेन्डीफलोरा, रेडियम ब्रोमेटम, स्टेलेरिया मीडिया।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.) पौंडिचेरी तथा विजयवाड़ा में लिया गया है।

1993–94 वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	-	160
लाभान्वित रोगियों की संख्या	-	80

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

क्रमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
1.	फार्मिका रूफा 30	40	19
2.	एक्टिया स्पाईकेटा 30	27	16
3.	एग्नायुस्तुरा वेरा 30	23	17
4.	कालोफाईलम 30	22	09
5.	रेडियम ब्रोमेटम 30	17	10
6.	मेग्नोलिया 30	11	02
7.	फार्मिक एसिड 30	10	05
8.	स्टेलेरिया मीडिया 30	10	02

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(1) फार्मिका रूफा

जोड़ों में अकड़न तथा टांगों में कमजोरी, दर्द का हिलने डुलने से उग्रता। टांगों में दर्द, खिंचाव, मांसपेशियों में फटने जैसा महसूस होना। दर्द अधिकतर स्नायुविक। जोड़ों को रगड़ने की इच्छा। उग्रता दबाव से तथा मालिश से।

(2) एक्टिया स्पाईकेटा

छोटे जोड़ों में दर्द, सूजन उग्रता हिलने डुलने पर। हाथों के जोड़ों में सूजन उग्रता ठंडा लगने से, बिना किसी ज्वर के। एक समय में उसे ज्यादा जोड़ों में तकलीफ होना। हाथों की उंगलियों के जोड़ों में दर्द तथा सूजन उग्रता ठंडी सिकाई से, रात्रि में तथा हिलने डुलने पर। जोड़ों में दर्द तथा सूजन बिना किसी ज्वर के।

(3) एन्नायुस्तुरा

टांगों में दर्द चलने पर, बड़ी अस्थियों में क्षय। घुटनों के जोड़ों में दर्द जोड़ों में कड़कड़ की आवाज असनस। कॉफी की तीव्र इच्छा। अति संवेदनशीलता। गर्दन में दर्द, कंधों में दर्द उग्रता दबाव से।

(4) कालोफाईलम

छोटे जोड़ों में अकड़न तथा खिंचाव जैसा दर्द, उग्रता रात्रि में। दर्द का एक तरफ से दूसरी तरफ जाना। पीठ में दर्द।

13. पैप्टिक अल्सर

निम्नलिखित औषधियों का पेप्टिक अल्सर में चिकित्सीय मुल्यांकन :-

एसिटिक एसिड, एट्रोपीन, कंडयुरेंगो, कोर्टिकोट्रोपिन, युफोर्बियम, हाईड्रोसाएनिक एसिड, सिम्फाईटम, युरेनियम नाईट्रिकम।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.) पौंडिचेरी में लिया गया है।

1993—94 वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	-	81
लाभान्वित रोगियों की संख्या	-	28

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

कमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
.....	.....	.....	.....
1.	एट्रोपीन 30,200, 1 एम.	21	11
2.	एसिटिक एसिड 30,200 1 एम.	19	02
3.	हाईड्रोसाएनिक एसिड मदर टिंक्चर, 6 एक्स, 30,200	13	06

4.	कन्डयुरेंगो 6 एक्स, 30,200	09	02
5.	युरेनियम नाईट्रिकम 6 एक्स, 30,200 1 एम.	08	04
6.	सिम्फाईटम 30,200	07	02
7.	युफोर्बियम 30,200, 1 एम.	05	01

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(1) एट्रोपीन

तीव्र उदर झिल्ली शोथ तथा संवेदनशीलता उदर झिल्ली शोथ एवं वमन। नाभिक्षेत्र में दर्द। पेट में दर्द एवं मुख में लालीपन तथा ज्वर के साथ स्नायुविक दर्द। ग्रहणी अल्सर के दर्द का आमाश्य में सभी तरफ विस्तार होना।

(2) एसिटिक एसिड

अत्याधिक लार बहना, भोजनोपरान्त वमन होना, दर्द के साथ पेट में संवेदनशीलता। छाती में तीव्र जलनकारी दर्द उदरशूल।

(3) कन्डयुरेंगो

पेट के दाहिने उपरी भाग में दर्द, लगातार जलन महसूस होना तथा भूख समाप्त होना। चिरकारी शोथ, भोजन नली में एवं छाती के मध्य भाग में अकड़न जैसा दर्द। पेट में दर्द, जलन जैसा गुदा से रक्तस्राव, पेट के दाहिने एवं बाएं उपरी हिस्से में दर्द तथा मितली।

14. आमवातिक सन्धिशोथ

निम्नलिखित औषधियों का आमवातिक सन्धिशोथ में चिकित्सीय मुल्यांकन :-

एक्टिया स्पाईकेटा, एन्नायुस्तुरा वेरा, कालोफाईलम, फार्मिका रूफा, फार्मिका एसिड, लिथियम कार्बोनिकम, मेग्नोलिया ग्रेन्डीफलोरा, रेडियम ब्रोमेटम, स्टेलेरिया मीडिया।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.) भारमौर, भारूच, डन्डेली, सिलिगुड़ी एवं जगदलपुर में लिया गया है।

1993–94 वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या – 734

लाभान्वित रोगियों की संख्या – 621

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

कमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
1.	एग्नायुस्तुरा वेरा मदर टिंक्चर, 6,30	68	50
2.	रेडियम ब्रोमेटम 6,30,200	64	47
3.	एक्टिया स्पाईकेटा मदर टिंक्चर, 6,30	61	42
4.	लिथियम कार्बोनिकम मदर टिंक्चर, 6,30	42	30
5.	कालोफाईलम 6,30,200	30	26
6.	फार्मिका रूफा मदर टिंक्चर, 6	27	20
7.	स्टेलेरिया मीडिया मदर टिंक्चर, 6,30	26	22
8.	फार्मिक एसिड 6,30	26	18
9.	मेग्नोलिया 30	07	02

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(1) एग्नायुस्तुरा वेरा

दोनों कंधों एवं गर्दन में दर्द, उग्रता दबाव से। घुटनों में दर्द, जोड़ों में कड़कड़ाने की आवाज, बाजुओं में भारीपन, मांसपेशियों तथा जोड़ों में अकड़ाहट। काफी पीने की तीव्र इच्छा, उंगलियों में ठंडापन।

(2) रेडियम ब्रोमेटम

घुटनों एवं टखनों में दर्द तथा सूजन, कमजोरी, दर्द, रात्रि में उग्रता, सुधार धीमी मालिश से। घुटनों तथा टखनों में संवेदनशीलता। रक्तालपता।

(3) एक्टिया स्पाईकेटा

कलाई तथा उंगलिया में दर्द एवं सूजन उग्रता हिलने डुलने पर एवं सुधार विश्राम से। घुटनों में दर्द एवं सूजन, जरा से श्रम से, उग्रता हिलने डुलने पर तथा, सुधार विश्राम से। दाहिनी कलाई एवं बाजु में दर्द। छोटे जोड़ों में आमवातिक दर्द। जोड़ों में सूजन हिलने डुलने पर।

(4) लिथियम कार्बोनिकम

कंधों में आमवातिक दर्द। घुटनों में दर्द, विशेषकर सीढ़ियां चढ़ने पर। टखनों में दर्द, पैरों की अस्थियों में दर्द उग्रता हिलने पर एवं सुधार उष्णता से। जोड़ों में दर्द एवं सूजन। सिर दर्द सुधार खाना खाने से, सारे बदन में अकड़ाहट जोड़ों में सूजन, गठ्ठे बनना।

15. आमवातीय सन्धिशोथ

आमवातीय सन्धिशोथ में निम्नलिखित औषधियों की प्रभावकारिता का चिकित्सीय मुल्यांकन :-

एक्टिया स्पाईकेटा, एन्गयुस्तुरा वेरा, कालोफाईलम फार्मिका रूफा, फार्मिक एसिड, लिथियम कार्बोनिकम, मेग्नोलियम ग्रेन्डीफलोरा, रेडियम ब्रोमेटम, स्टेलेरिया मीडिया।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.) अगरतला, लेह तथा इद्दुकी में लिया गया है।

1993–94 वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या	-	191
लाभान्वित रोगियों की संख्या	-	117

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

कमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
.....	.....	.....	.....
1.	रेडियम ब्रोमेटम 30	72	44
2.	कालोफाईलम 30	26	12
3.	एन्गयुस्तुरा वेरा मदर टिंक्चर, 30	25	21
4.	फार्मिका रूफा 30	24	17
5.	लिथियम कार्बोनिकम 30	15	08
6.	एक्टिसा स्पाईकेटा 30	14	08
7.	स्टेलेरिया मीडिया मदर टिंक्चर, 200	1	06
8.	फार्मिक एसिड 30	04	01

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(1) रेडियम ब्रोमेटम

घुटनों एवं टखनों में तीव्र दर्द। कंधों, बाजुओं, हाथों एवं उंगलियों में तीव्र दर्द। कूल्हों एवं टांगों की मांसपेशियों में दाहता। दर्द उग्रता रात्रि में, खड़े होने पर, सुधार खुली वायु में, लगातार हिलने डुलने पर, गर्म स्नान से, लेटने पर एवं दबाव से।

(2) कालोफाईलम

हाथों एवं पैरों की उंगलियों, टखनों इत्यादि में अकड़न तथा फैलने वाला दर्द। हाथों को बंद करने पर कटने जैसा दर्द। दर्द एक स्थान से दूसरे स्थान पर विस्तारित होता है।

(4) फार्मिका रूफा

गठिया, आस्थिसन्धियों में आतवातीय विकार। दर्द, उग्रता हिलने डुलने पर, सुधार दबाव से। चिरकारी गठिया एवं जोड़ों में अकड़न। भार उठाने के कारण विकार। जोड़ों में अकड़न तथा सिकुड़न। मांसपेशियों का फटने जैसा महसूस होना। टांगों में कमजोरी। आमवातिका विकार के साथ बेचैनी। बैठने से सुधार नहीं होता। अर्धरात्रि एवं मालिश से सुधार।

16. नासाशोथ

निम्नलिखित औषधियों का नासाशोथ में चिकित्सीय मुल्यांकन :-

एनिमोप्सिस कैलिफोर्निका, एन्थिमिस नोबिलिस, औरम म्युरियाटिकम, जस्टीशिया एधाटोडा, लेम्ना माईनर, मैन्थोल, क्विलिया सेपोनेरिया, सेन्गवीनेरिया नाईट्रिका, साइनेपिस नाईग्रा, थेरिडियोन।

इस अध्ययन को चिकित्सा अनुसंधान ईकाई (आ.) शिलांग, जगदलपुर तथा भारूच में लिया गया है।

1993–94 वर्ष की उपलब्धियां

रोगियों की संख्या – 276

लाभान्वित रोगियों की संख्या – 195

निर्दिष्ट औषधियों की प्रभावकारिता एवं पोटैन्सी

क्रमांक	औषधि का नाम एवं पोटैन्सी	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
1.	जस्टीशिया एधाटोडा 3 एक्स, 30	102	76
2.	लेम्ना माईनर 3 एक्स, 30	53	44
3.	क्विलिया सेपोनेरिया 30	36	24
4.	एन्थीमिस नोबिलिस 30	27	21
5.	मेन्थोल 30	14	10
6.	साईनेपिस नाईग्रा 30	08	04
7.	सेन्गवीनेरिया नाईट्रिका 30	07	02
8.	औरम म्युरियाटिकम 30	06	03
9.	थेरिडियोन 30	04	01

अत्याधिक प्रभावकारी औषधियों के लक्षण

(1) जस्टीशिया एधाटोडा

खांसी के साथ नासास्राव। स्राव पतला, जलीय, गाढ़ा, सारे दिन, उग्रता प्रातःकाल, सांयकाल, रात्रि में ठंडे से। खांसी शुष्क, सारे दिन। उग्रता ठंडे से रात्रि में, सुधार गर्म पानी पीने से। ठंडे में जाने से छींके आना। नासिका में दर्द, न अवरूद्धता,

उग्रता रात्रि में, गले में रूकावट महसूस होना। सिर एवं छाती में भारीपन। बदन में दर्द सुधार मालिश से। ज्वर के साथ बदन में दर्द।

(2) लेम्ना माईनर

नासा स्राव, पतला, जलीय, सफेद, सारे दिन उग्रता प्रातःकाल, सांयकाल रात्रि में, ठंड एवं वर्षा ऋतु में, नासा अवरूद्धता, उग्रता रात्रि में, वर्षा ऋतु में प्रातः एवं ठंड से, सांयकाल एवं सुधार खुली वायु में। शुष्क खांसी उग्रता रात्रि में। गले में शुष्कता। आंखों से जलीय स्राव एवं आंखों में खुजाने जैसा महसूस करना। बदन में दर्द, लेटने की इच्छा। मालिश से सुधार। ज्वर के साथ प्यास लगना, ठंड के प्रति संवेदनशीलता।

(3) क्विलिया सेपोनेरिया

नासास्राव के साथ गले में दाहता। स्राव पतला, जलीय, सफेद उग्रता प्रातः काल, ठंडे मौसम में, दिन में एव सुधार रात्रि में। शुष्क खांसी, दिन में, सांयकाल गले में शुष्कता, खुजली, दाहता तथा जलन। गले में बलगम गिरना। नासा झिल्ली में लाल्लीपन, नासा पालिप।

(4) एन्थिमिस नोबिलिस

नासिका से पतला जलीय नासास्राव एवं अश्रुस्राव, उग्रता कमरे के अन्दर रहने से। कभी-कभी स्राव गाढ़ा पीला, सारे दिन खांसी उग्रता प्रातः एवं रात्रि में।